राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 545
लावा
नागराज
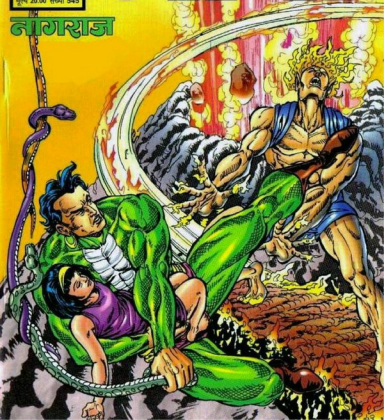
लावा! पिघली और दहकती हुई चट्टानों का वह सैलाब जो पृथ्वी के गर्भ में हमेशा से मौजूद है। जब-जब ये सैलाब ज्वालामुखियों के रास्ते से बाहर आया उसने विनाश का तांडव पैदा कर दिया। इसके रास्ते में जो आया वो खत्म हो गया। आज दुनिया और लावा के बीच में खड़ा है नागराज। और उसकी तरफ बढ़ता आ रहा है...

लावा

कथा :	चित्र :	इंकिंग :	सुलेख एवं रंग संयोजन :	संपादक :
जॉली सिन्हा	अनुपम सिन्हा	विनोदकुमार	सुनील पाण्डेय	मनीष गुप्ता

नागद्वीप - पृथ्वी पर मौजूद एक ऐसा द्वीप है जहाँ पर भयंकर विष से लबालब भरे इच्छाधारी सर्पों का निवास है -
इस द्वीप के संस्थापक महात्मा कालदूत इस द्वीप को अपनी योग साधना के द्वारा अदृश्य रखते हैं। ताकि बाहरी दुनिया की नजरों से यह द्वीप छुपा रहे और मानव यहां पर आकर अपनी जान न गंवा बैठे -
पर वर्ष में एक दिन ऐसा भी आता है जब प्राकृतिक शक्तियों के आगे योग साधना की शक्ति विफल हो जाती है -
तब सिर्फ सावधानी ही काम में आती है -
नागद्वीप वासियों! आज की ये सभा हर वर्ष इसी दिन बुलाई जाती है! आज मकर संक्रान्ति है! सूर्य देव आज मकर रेखा को पार करते हैं, और पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्द्ध से उत्तरी गोलार्द्ध में आ जाते हैं! और उनकी इस क्रिया से एक दिन के लिए नागद्वीप अदृश्य नहीं रहता है!
आज आप सभी को अतिरिक्त रूप से सतर्क रहना होगा! द्वीप के चारों तरफ नजर रखनी होगी! और अगर कोई द्वीप की तरफ आता दिखाई दे तो पहले स्वयं को छुपाने की कोशिश करनी होगी! अब मैं सूर्य देव की अराधना के लिए जा रहा हूं!
सभी सैनिक सर्प नागद्वीप के चारों तरफ फैल जाएं और अपनी आंखें खुली रखें! हम नहीं चाहते कि इस द्वीप पर मानव आएं और इस कारण हमारे हाथों उनका अहित हो!

द्वीप के चारों तरफ फैले समुद्र पर तो नजर रखी जा सकती है, और उस तरफ से आती किसी भी आपदा को अपनी तरफ आने से रोका जा सकता है–
परन्तु जब मुसीबत आसमान से आकर सिर पर टूटने वाली हो तो कोई क्या करे–
हम आपके आभारी हैं मिस्टर कलावा, कि आपने हमारे प्रयोग के लिए अपने आपको स्वयं सेवक के रूप में प्रस्तुत किया है!
मानवता को अगर मुझसे कुछ भी फायदा हो सकता है मिस्टर जोंस, तो मैं अपनी जान देने के लिए तैयार हूं! मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझको यह मौका दिया!
आज हम आपका आभार व्यक्त कर रहे हैं, कल सारी दुनिया आपकी पूजा करेगी! आपकी बेटी को भी हमने यहां पर आपके साथ इसीलिए बुलाया है ताकि वह भी अपने पिता की महानता को अपनी आंखों से देख सके!
और इन गौरवशाली पलों को हमेशा के लिए याद रखे!
मुझको शर्मिन्दा न करें! बस मुझको इतना बताइए कि मुझे करना क्या है!
यह तो हम आपको पहले ही बता चुके हैं कि हमने एक ऐसा बायोकेमिकल प्रोडक्ट बनाया है, जिसको पीने से इंसान आग पर विजय पा लेगा!
उसके अंदर आग की ऊर्जा के प्रति ऐसी प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाएगी, जो उसके शरीर को जलने नहीं देगी!
इस रसायन का प्रयोग हम पशुओं पर सफलतापूर्वक कर चुके हैं!

परन्तु इंसानों पर इसका प्रयोग करना अभी बाकी है! बस हमको इतना पता है कि ये रसायन अगर इंसान को फायदा नहीं पहुंचाएगा तो नुकसान भी नहीं पहुंचाएगा!
अगर नुकसान पहुंचाएगा तो भी मैं मानवता की सेवा के लिए यह खतरा उठाने को तैयार हूं! पर मुझको यह नहीं समझ में आ रहा है कि ये प्रयोग आप हवाई जहाज में करना क्यों चाहते हैं?
क्या इसका आपके प्रयोग से कुछ संबंध है?
गहरा संबंध है मिस्टर कलावा! अधिकतर देश अपनी सीमाओं में ऐसे प्रयोगों की इजाजत नहीं देते हैं जो इंसानों पर किए जाएं! और फिर सरकारी इजाजत लेने में समय भी तो बहुत लगता है!
हमारे पास इतना वक्त नहीं है! इसीलिए हम ये प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय वायु सीमा में कर रहे हैं! जहां पर किसी का भी शासन नहीं चलता!
आप बहुत दूर की सोचते हैं मिस्टर जोंस...
... अगर वक्त कम है तो फटाफट बताइए कि मुझको क्या करना है!
सबसे पहले तो आपको इस यंत्र को अपनी छाती पर पहनना है! यह हमको प्रयोग के दौरान आपके शरीर में होने वाली बारीक से बारीक हरकत को भी हमारे कंप्यूटर पर दिखाता रहेगा... और फिर...
आ... आप जल्दी से जल्दी ये यंत्र पहनिए मिस्टर कलावा! फिर हम आपको बताते हैं कि आगे आपको क्या करना है!
ओ. के. मिस्टर जोंस!
बॉस! धुआं नजर आने लगा है!
क्या बकता है!
अभी तो हम वहां से बहुत दूर हैं!
वो देखो बॉस!
अरे, सचमुच! पर हम इतनी जल्दी यहां तक कैसे पहुंच गए! अभी तो रसायन का मिश्रण पूरी तरह से तैयार भी नहीं है!
जो तैयार है उसी की डबल डोज पिला दो!
हमारे पास हवा में चक्कर काटने लायक ईंधन नहीं है!

फिर तो और कोई रास्ता नहीं है! हमको पांच मिनटों के अंदर तैयारी पूरी कर लेनी है!
क्योंकि पांच मिनटों के अंदर हम उस ज्वालामुखी तक पहुंच जाएंगे!
आप तैयार हो गए मिस्टर कलावा?
हां! मैं एकदम तैयार हूं! अब बताइए कि मुझे क्या करना है!
आपको ये रसायन पीना है! ये आपके शरीर की कोशिकाओं को आग से सुरक्षित रखेगा! और ये यंत्र आपके शरीर की हर हरकत को हमारे कंप्यूटर तक पहुंचाता रहेगा!
लाइए! शुभ कार्य में देर कैसी! मैं इसे अभी पी लेता हूं!
कलावा ने रसायन को गटागट पी डाला-
गटगट! आहा! अब बताइए क्या करना है?
अब आपको इस ज्वालामुखी के अंदर कूदना है!
व्हाट!
मुझे... ऐसा... ऐसा करना होगा?

Amaan
राज कॉमिक्स
मैं ऐसा नहीं कर सकता! ज्वालामुखी तो बहुत गर्म होता है! उसके अंदर तो चट्टानें तक पिघल जाती हैं! पता नहीं ये रसायन उच्च तापमान से मेरे शरीर की रक्षा कर पाएगा या नहीं!
ये काम तो अब आपको करना ही पड़ेगा! अगर ज्वालामुखी के अंदर के तापमान भी आपको नुकसान नहीं पहुंचा पाया तो यह भी पक्का हो जाएगा कि छोटी-मोटी आग तो इस रसायन को पिए हुए इंसान का तो कुछ बिगाड़ ही नहीं सकती!
तुम प्लेन में प्रयोग करने का मतलब तो समझ गए, पर यह नहीं समझे कि मैंने तुम्हारी बच्ची को भी तुम्हारे साथ ही क्यों बुलाया था?
अगर तुमने हमारी बात नहीं मानी तो धमाका तुम्हारी बच्ची की खोपड़ी उड़ा देगा!
मुझको तुम्हारी बातों में धोखे की बू आ रही है!
अब मुझको समझ में आ रहा है कि ये प्रयोग तुम प्लेन में ही क्यों करना चाहते थे मिस्टर जोंस!
अब मैं तुम्हारा साथ नहीं दूंगा!
मार दो! अच्छा होगा! ये बिन मां की बच्ची है!
अगर मैं ज्वालामुखी में जल गया तो वैसे भी इसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है!
तू ऐसे नहीं मानेगा! पर हमारे पास तुझे मनाने के और भी तरीके हैं!
ले! ये गई तेरी बच्ची ज्वालामुखी में! बचा सकता है तो बचा ले कलावा!
नहीं!
कलावा ने निर्णय लेने में एक पल भी नहीं गंवाया-
घबराओ मत बेटी! मैं आ रहा हूं तुझे बचाने!

ये क्या हो रहा है ? एक बच्ची वायु-यान से गिर गई है और वह सीधे ज्वालामुखी के मुहाने के अंदर जा रही है! इसको बचाना होगा! पर कैसे ?
अगर महात्मा कालदूत समाधि में न होते तो उनकी शक्तियां इसको बचा लेतीं! अब तो शायद वही आदमी इसको बचा सके जो इसके साथ ही कूदा है!
कलावा ने ऐन समय पर अपनी बेटी को तो बचा लिया-
लेकिन कलावा को धक्का देकर रास्ते से हटाने वाला कोई नहीं था-
उसका यंत्रों से लैस शरीर दहकते लावे में घुसता चला गया-

ओफ! बच्ची तो बच गई है! लेकिन इतनी ऊंचाई से गिरकर वह बचेगी नहीं! चट्टानों से टकरा कर इसकी हड्डियां चूर-चूर हो जाएंगी!
अरे! ये क्या हो रहा है! अब ये बच्ची हवा में तैरती हुई नीचे उतर रही है! किसी पंख की तरह!
पता नहीं किस चमत्कार ने इसको बचाया है, भाई विषांक! पर ये डर के मारे बेहोश हो गई है!
वह यान इसको लेने के लिए जरूर वापस आएगा! तब तक हमको इसे होश में ले आना चाहिए!
और सेनापति मौर सर्प आप ज्वालामुखी के मुहाने पर कुछ सैनिक सर्पों को भेजिए!
पता कीजिए कि ज्वालामुखी में गिरने वाला इंसान किस अवस्था में है!
जो आज्ञा!
कलावा का हाल जानने के लिए विसर्पी की तरह-

हा हा हा! कलावा पाँच मिनट पहले लावे के अंदर गिरा था! पर देख अब तक हमारे कंप्यूटर पर उसके जिन्दा होने के सुबूत मिल रहे हैं!
पर ज्यादा देर तक सिग्नल्स नहीं मिलेंगे बॉस!
यंत्रों के हिसाब से इस वक्त उसका बॉडी टैंपरेचर 120 डिग्री सेंटीग्रेट है! ब्लड प्रेशर 400/190 है, और हृदय गति यानी हार्ट रेट है 275! कुछ ही देर में उसका शरीर लावे के अंदर बम की तरह फट पड़ेगा!
फटना तो है ही! लावे के हजारों डिग्री तापमान में कलावा भला कब तक जिन्दा रहेगा!
पर एक बात पक्की हो गई है! अब छोटी-मोटी आग और धमाकों को हमारी दवा को पीने वाला आराम से झेल जाएगा!
प्लेन को ऑटो पायलट से हटा लो और इसको वापस महानगर एयरपोर्ट ले चलो!
अब इस 'एंटी हीट सीरम' से पैसे कमाने का वक्त आ गया है!
महानगर पर खतरा मंडराने वाला था-
पर महानगर वालों को खतरों की परवाह नहीं रहती थी-
क्योंकि खतरा तो ऐसे महानगरों की जिन्दगी का एक अंग बन चुका है-
फिर वह खतरा हवा से हो, पानी से हो...
... या फिर आग से हो-
FIRE
FIRE

अरे! अरे! रुको भइया! आखिर बात क्या है?
अरे हटो! भागो! मरने के लिए यहां क्यों..बैठे हो?
MANAGER
स्टेंशन एवरीबडी!
अरे! ये फायर ब्रिगेड वाले हमारे बैंक में क्या कर रहे हैं?
हमने तो इनको नहीं बुलाया!
माफ कीजिए, चीफ! आप गलत पते पर आ गए हैं! हमने आग लगने की कोई रिपोर्ट नहीं की है!
आपने नहीं की, पर उस गैस कंपनी ने की है! जिसका पाइप आपके बैंक की इमारत के नीचे से आ रहा है! इस इमारत के ठीक नीचे के पाइप में एक मेजर गैस लीक हो गया है!
कमाल है! आप सभी को जुकाम है क्या? जरा हवा को सूंघकर देखिए!
सूं सूं sss! गैस की महक तो आ रही है!
ये महक तो बढ़ती ही जा रही है!
LOCKERS
यानी खतरा बढ़ता आ रहा है! आप सब इस वक्त एक बम के अंदर बैठे हुए हैं!
यह इमारत कभी भी धमाके में उड़ सकती है! फटाफट बिल्डिंग को खाली कर दीजिए!
फायर चीफ को दुबारा समझाने की जरूरत नहीं पड़ी! लगभग हर कर्मचारी दौड़ का ओलम्पिक रिकॉर्ड बनाने के मूड में था-
भागो!
अरे, रास्ता दो!
उई! दबा दिया!

खाली हो गया है, चीफ! अब क्या करना है?
एक मिनट!
अबे अब ये गैस का सिलेंडर बंद कर दे! बदबू से नाक फटी जा रही है!
सब भाग गए!
ओ. के. बॉस!
जा! मैनेजर के कमरे से 'मेन-सेफ' की चाबी ले आ!
वही ढूंढ रहा हूं बॉस! मैनेजर तो चालू निकला! भागते-भागते भी चाबी ले गया!
कोई बात नहीं! गैस कटर निकाल!
और सेफ को काटने का काम चालू कर दे!
और हम क्या करें बॉस?
बताता हूं! सिलेंडर नीचे रख!
ओऽऽऽ! वे सही कह रहे थे। गैस से धमाका हो गया है!
RAJNAGAR CORPORATION
FIRE
बिल्डिंग में आग लग गई है! पर फायर मैन बहुत बहादुरी से आग का सामना करके उसे बुझा रहे हैं!

हा हा हा ! अब तुम लोग असली फायरमेन की तरह आग बुझाओ ! आखिर बाहर से देखने वालों को भी यह तो लगना ही चाहिए न कि हम असली फायर ब्रिगेड वाले हैं और बैंक के अंदर आग बुझा रहे हैं !
ही या sssss बड़ा मज़ा आ रहा है !
सेफ कट गई है, बॉस !
तो अंदर जा और नोटों के बंडलों को अपनी जैकेट की जेबों में भर ले ! तुम सब भी यही करो ! फटाफट खाली कर दो सेफ को नोटों से !
ई या ऊऊऊ
क्या हुआ ?
अंदर... अंदर...
... एक बड़ा सा और मोटा सा सांप बैठा है !

चुप डरपोक! तू तो एक बच्चे से लॉलीपाप तक नहीं लूट सकता! दिखा कहां है वह मोटा सांप! अभी उसका फन उड़ा देता हूं!
दिखा! कहां है?
अ... अभी तो यहीं पर ही था!
कहीं इधर-उधर सरक गया होगा! तू बूट पहने है! सांप तेरा कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा! अब फटाफट नोट भर अपनी जैकटों में!
उन दोनों को भी बुला लो जो आग बुझाने का नाटक कर रहे हैं!
और फिर-
खतरा टल गया है! हमने गैस लीक को कुछ देर के लिए बंद कर दिया है!
कुछ देर के लिए क्यों?
बाकी काम के लिए गैस कंपनी वाले आ रहे हैं!
इसलिए फिलहाल आप लोग अभी इमारत के अंदर न जाएं! हमको दूसरे घटनास्थल पर बुलाया गया है! इसलिए हमको जाना पड़ रहा है!
FIRE
हियाsss मजा आ गया। न पुलिस, न गोली, न खतरा।
और हम हो गए माला-माल!
हमने बैंक से दस करोड़ लूट लिए!
और... अब हम लुटेंगे, बॉस!
हम लुटेंगे! क्यों? कौन लूटेगा हमें?
सामने देखो!
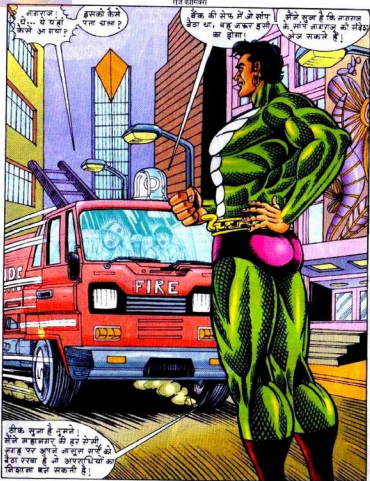
नागराज! ये... ये यहां कैसे आ गया?
इसको कैसे पता चला?
बैंक की सेफ में जो सांप बैठा था, वह जरूर इसी का होगा!
मैंने सुना है कि नागराज के सांप नागराज को संदेश भेज सकते हैं!
FIRE
ठीक सुना है तुमने! मैंने महानगर की हर ऐसी जगह पर अपने जासूस सर्पों को बैठा रखा है जो अपराधियों का निशाना बन सकती है!

रुकना मत बॉस! दस करोड़ का सवाल है! दबा दो इसको! फिर हम इस खतरे से आजाद हो जाएंगे!
गुड आइडिया! टूटने के लिए हड्डियां तो इसके बदन में भी हैं! ये दबा एक्सीलेटर पर मेरा पैर...
...और ये दबा नागराज का बदन!
हा हा हा! कौन खाएगा नागराज की चटनी!
जहरीली चटनी होगी! मैं तो कभी न खाऊं!
पर अब ये ट्रक आगे क्यों नहीं बढ़ रहा है!
FIRE
बचेगा कैसे? नागराज ने ट्रक को पीछे से पकड़ रखा है! वो जरूर गायब होकर बच गया होगा! अब क्या करें?
अब हमारे गायब होने का समय आ गया है!
भागो यहां से!

ई याऊऊऊ!
ये सांप छोड़ रहा है। और सांप देखते ही मेरा दिल धड़कना बंद कर देता है!
पर मेरा दिल तो दुगुनी तेजी से धड़कने लगता है भई!
अब क्या करें? अब तो भाग भी नहीं सकते!
भागेंगे मेरे दुश्मन! यानी नागराज! बैंक के लॉकर से इसका सांप तो पिस्तौल की महक सूंघकर ही भाग गया था!
ये कम से कम गोलियां खाकर तो भागेगा ही!
बॉस! बॉस!
भूल क्या गए क्या?
क्या भूल गया?
नागराज पर गोलियां असर नहीं करती हैं!
अब याद दिला रहा है, गधे?

कहानी 19 पेज से जारी

सब एक साथ टूट पड़ो इस पर! हम सब लड़ाई की अलग-अलग कलाओं में माहिर हैं!
अगर ये गायब होकर बचने की कोशिश न करे तो हमसे बच नहीं पाएगा!
गायब मैं नहीं होऊंगा! गायब तो तुम चारों होगे! कम से कम दस सालों के लिए जेल की सलाखों के पीछे!
ये अपराधी तो लड़ाई के अलग-अलग क्षेत्रों के माहिर थे-
लेकिन नागराज युद्धकला के हर क्षेत्र का उस्ताद था-
फिर चाहे वह स्नेक स्टाइल कुंगफू हो-
कट
हिन्दुस्तानी कुश्ती हो-

या यूरोपियन शैली की ग्रीको-रोमन रेसलिंग-
और अगर दुश्मन मैदान छोड़कर भागने की कोशिश करे-
तो मैक्सिकन काऊ बॉय स्टाइल में तो नागराज का जवाब ही नहीं है-
बताओ! लूट के पैसे कहां हैं?
पैसे नहीं नोट! हमारी जैकटों में भरे हुए हैं!
सब अपनी जैकटें उतारो!
गुड!
अब हम पुलिस के आने का इंतजार करेंगे!
नहीं! नागराज इतनी आसानी से मेरे दस करोड़ मुझसे छीन नहीं सकता!
आग बुझाने वाली फोम से भरा ये सिलेंडर मेरे काम आएगा!
हा हा हा! अब तू कुछ देर तक कुछ भी नहीं देख पाएगा नागराज! और तब तक हम नोटों से भरे जैकट लेकर भाग चुके होंगे!
ओह! मैं इस वार के लिए तैयार नहीं था!

ये फोम अत्यधिक ठंडी होती है, और मुझमें सर्पों के गुण होने के कारण ठंड मेरे शरीर के रक्त प्रवाह को धीमा करके मुझमें कमजोरी पैदा कर देती है!
मुझे ठीक होने में थोड़ा समय लगेगा! पर तब तक मुझको इन गुंडों को भागने से रोकना होगा!
सौडांगी!
आदेश मिलते ही नागराज के शरीर में वास करने वाले सैकड़ों इच्छाधारी नागों में सबसे अनुभवी सौडांगी नागराज की कलाइयों से बाहर आ गई—
मेरे ठीक होने तक इन अपराधियों को भागने से रोको!
जैसा तुम चाहो नागराज! मैं तुम्हारे शरीर में रहकर पूरी घटना को साफ तौर से देख रही थी!
सबसे पहले तो इनसे लूट के धन को छीनकर इनके अपराध को असफल करना है!
हमारे पैसे!
हमारे पैसे इस इच्छाधारी नागिन ने छीन लिए!

सौडांगी के सरसराने की गति गुंडों के भागने की गति से कहीं ज्यादा थी-
भागोगे कहां? सौडांगी की दुम कानून के हाथों से भी ज्यादा लंबी है!
ई याऊऊऊ! मेरा पैर!
और नागफनी के पौधों से भी ज्यादा कांटेदार हैं!
अब तू एक कदम भी आगे नहीं रख पाएगा!
आऊ! ये तो दुम की मदद से छलांग भी लगा लेती है!
आऽऽऽह!
ये नागिन तो पीछे ही पड़ गई है! पैसे भी हाथ से गए और लगता है कि अब आजादी भी जाएगी!
मुझे अगले कई साल सलाखों के पीछे बिताने होंगे!

किन घटनाक्रम
ज़ी से बदलने वाला
ये क्या हो रहा है? मेरे शरीर पर जमी ठंडी पर्त अचानक तेजी से पिघल रही है! और वातावरण भी गर्म होता जा रहा है!
पर जो भी हो रहा है! अच्छा ही हो रहा है! क्योंकि इस गर्मी ने ठंड के कारण पैदा हुई मेरे शरीर की कमजोरी को दूर कर दिया है!
लेकिन फिर भी- वह उस तक पहुंच नहीं पाई-
ओ भगवन्! ये... ये क्या है?
वैसे अब मेरी जरूरत है नहीं! सौडांगी ने तीन लुटेरों को पकड़ लिया है! और वह चौथे लुटेरे की तरफ बढ़ रही है!
सौडांगी अब लुटेरों के बॉस से कुछ ही मीटर की दूरी पर थी-
?
ये तो लावे का झरना है! पर ये शहर के बीचो-बीच में अचानक कैसे फूट पड़ा? महानगर के तो आसपास सैकड़ों मील तक कोई ज्वालामुखी भी नहीं है!
ये आफत प्राकृतिक नहीं हो सकती! जरूर इसके पीछे किसी शैतानी शक्ति का हाथ है!

नागराज का शक सही सिद्ध होने में सिर्फ एक पल लगा–
आ ssss ह!
मैं आजाद हो गया! मैं आजाद हो गया!
अब मुझे ढूंढना है! मुझे ढूंढना है!
ये क्या बला है? ये क्या चीज ढूंढ रहा है और बिना कुछ पूछे या बोले विनाश क्यों फैला रहा है?
ये तो सिर्फ यही बता सकता है!
और इस मिस्टर लावा से ये सवाल पूछने की हिम्मत सिर्फ तुम ही कर सकते हो नागराज!

ठीक है! तुम इन बेहोश लुटेरों को गिरते हुए लावे से दूर करो! वर्ना लावा इनको जलाकर खाक कर देगा! तब तक मैं मिस्टर लावा से इस हरकत का कारण जानने की कोशिश करता हूं!
ओ. के. नागराज!
बस, जरा जल्दी करना!
ऐ मिस्टर लावा! एक मिनट! तुम हो कौन और इस शहर को तबाह क्यों करना चाहते हो?
लावा! हां, हां, शायद यही मेरा नाम है! या इससे मिलता-जुलता है! पता नहीं! लेकिन मुझे ढूंढना है! मुझे ढूंढना है!
मैं कहां पर हूं?
तुम महानगर में हो! और मैं नागराज हूं! मुझे बताओ कि तुम क्या ढूंढ रहे हो?
शायद मैं उस चीज को ढूंढने में तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं!
मैं क्या ढूंढ रहा हूं? याद नहीं आ रहा है! पर मुझे उसको ढूंढना बहुत जरूरी है! वह... वह चीज नहीं मिली तो मैं मर जाऊंगा!
पर वह चीज है क्या? अगर तुमको ये याद नहीं हो तो इतना ही बता दो कि वह चीज खोई कहां पर थी?
हां! थोड़ा-थोड़ा याद आ रहा है! उस जगह पर...
... उस जगह पर...

यही तो है! यही है वह जगह!
अरे! अरे! तुम कहां जा रहे हो? सुनो तो! सुनो!
क्योंकि यहीं पर हैं वे प्राणी जिन्होंने मेरी चीज छुपाई है!
तू है न? तू ही तो है! तू ही वहां पर थी! बता, वह कहां है?
आऽऽऽ ह्! मेरी गर्दन!
मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि तुम किस चीज की बात कर रहे हो!
मुझे... मुझे याद नहीं आ रहा है! पर तू तो वहां पर मौजूद थी! तुझे तो पता ही है कि मैं किस चीज की बात कर रहा हूं!
मुझे बस इतना याद है कि वह चीज बहुत प्यारी है! बता कहां पर छुपाकर रखा है तूने मेरी चीज को! बता, वर्ना भस्म कर दूंगा मैं तुझको!
बस, बहुत हो गया! भुलक्कड़ तू खुद है और दिमाग दूसरों का खराब कर रहा है!
छोड़ सौडांगी को! जब ये मेरे शरीर से कहीं दूर गई ही नहीं तो ये तेरी उस गुमनाम जगह पर 'उस' चीज को कैसे देखेगी!
तड़ाक
आऽऽऽ ह्!
तुम सब मिले हुए हो!
मेरी चीज को मुझसे चुराना चाहते हो!

पर मैं... क्या नाम था मेरा? हां, लावा! मैं लावा तुम लोगों को जुबान खोलने पर मजबूर कर दूंगा!
आSSSह!
आSSSह! इसका हर बार मुझको और ज्यादा झुलसाता जा रहा है!
अगर नागराज वह आगलेवा वार खाकर भी सतर्क न रहा होता-
तो लावे का वह झरना उसको पूरी तरह झुलसा देता-
आSSSह! इसका तो लावे पर गहरा नियंत्रण है!
लगता है जैसे कि दहकता लावा, पालतू कुत्ते की तरह इसकी बात मान रहा हो!

अब जगह-जगह से लावे के झरने फूट रहे हैं, और लावा का बहाव इमारतों की तरफ बढ़ रहा है! इस बहाव को सिर्फ लावा ही रोक सकता है!
मुझे लावा को काबू में करके इस बहाव को रोकना ही होगा!
नहीं नागराज! रुक जाओ! मुझे तो मेरी तंत्र शक्तियों ने झुलसने से बचा लिया था! पर तुम तो पहले ही काफी झुलस चुके हो! अब अगर तुम मिस्टर लावा के पास गए तो तुम्हारी राख भी नहीं मिलेगी!
ठीक कहा!
पहले मुझे कुछ और करना होगा!
अगर ये शैतान नहीं, इंसान है तो मैं इसको एक ही घूंसे से बेहोश कर दूंगा! और उसके लिए मुझे इसके पास तक पहुंचना ही होगा! क्योंकि मेरी नाग शक्तियां लावे की दीवार को पार नहीं कर सकती हैं!
पर तुम इसके पास पहुंचोगे कैसे?
इसके लिए एक आइडिया मेरे पास है सौडांगी! आओ मेरे साथ!
अब ये तुम क्या कर रहे हो नागराज! फायरमैनों की पोशाक एक के ऊपर एक पहनते जा रहे हो!
ये पोशाकें एस्बेस्टस के फाइबर से बनती हैं और एस्बेस्टस अग्निरोधक होता है! ये चार गाऊन और बेहोश हुए लुटेरों के बूट मुझे उतनी देर तक लावे की गर्मी से सुरक्षित रखेंगे, जितनी देर में मैं लावा तक पहुंचकर उसको बेहोश कर सकूं!
बहुत भाग चुके तुम दोनों! अब तुम दोनों भाग नहीं सकोगे! क्योंकि मैं तुम्हारे भागने के हर रास्ते को लावे से घेर दूंगा!
अब इससे पहले कि ये लावा तुम दोनों तक पहुंच कर तुम्हें भस्म कर डाले, मुझे मेरी चीज का पता बता दो और तब मैं तुम्हारी जानें बख्श दूंगा!

तुमको नहीं...
...तुमको देना है मिस्टर लावा!
आऽऽऽह! तेरा हाथ है या हथौड़ा! मुझे चक्कर आ गया है! तुम लोग मेरी सबसे प्यारी चीज के साथ-साथ मेरी जान भी मुझसे छीन लोगे!
पर मैं ऐसा नहीं होने दूंगा!
नहीं होने दूंगा!
मेरे संभलने तक लावा तुमको रोकेगा!
आऽऽऽह! अद्भुत शक्ति है लावा में! इसके इशारे पर लावे के उबलते झरने में से लावे की बनी आकृतियां निकलकर मुझ पर हमला कर रही हैं!

इन्होंने तो मेरे पूरे प्लान को फेल कर दिया है! अगर मुझको लावा पर एक वार और करने का मौका मिल जाता तो ये झंझट यहीं पर खत्म हो जाता!
लेकिन अब लगता है कि खत्म होने की बारी मेरी है!
आऽऽऽ ह!
लावे की आकृतियां नागराज को झुलसाती आ रही थीं-
और नागराज के पास उनसे लड़ने के लिए कोई भी हथियार नहीं था-
कैच नागराज!
अब ये इन प्राणियों को खत्म करने के काम में आएगा! इसका फोम पिघली चट्टानों से बनी इन आकृतियों को ठंडा कर देगा!
ओऽऽऽ ह! यह तो वही फोम उगलने वाला फायर-एक्सटिंग्विशर है जिससे लुटेरों ने मुझे बेबस किया था!

और ये फिर से इतने ठोस हो जाएंगे कि मैं तोड़कर इनको नष्ट कर सकूं!

इन्होंने तो मेरे पूरे प्लान को फेल कर दिया है! अगर मुझको लावा पर एक वार और करने का मौका मिल जाता तो ये झंझट यहीं पर खत्म हो जाता!
लेकिन अब लगता है कि खत्म होने की बारी मेरी है!
आऽऽऽ ह!
लावे की आकृतियां नागराज को झुलसाती जा रही थीं -
और नागराज के पास उनसे लड़ने के लिए कोई भी हथियार नहीं था-
कैच नागराज!
अब ये इन प्राणियों को खत्म करने के काम में आएगा! इसका फोम पिघली चट्टानों से बनी इन आकृतियों को ठंडा कर देगा!
ओऽऽऽ ह! यह तो वही फोम उगलने वाला फायर-एक्सटिंग्विशर है जिससे लुटेरों ने मुझे बेबस किया था!

देखते ही देखते लावे से बने वे प्राणी नष्ट हो चुके थे-
लेकिन उन्होंने अपना मकसद पूरा कर दिया था-
लावा को इतना समय मिल चुका था कि वह अपने होश को संभालकर-
फिर से नागराज पर हमला कर सके-
आssssह!
तुमको फिर से होश आ गया है! लेकिन अब मेरे पास तुम्हारे वारों का जवाब है! और मैंने इसका परीक्षण भी कर लिया है!
ये फोम तुमको जमाकर ठंडा कर देगी, और फिर मैं तुम पर लगातार इतने वार कर सकूंगा कि तुम पूरी तरह से बेहोश हो जाओ!

लावा
उफ्‌! सिलेंडरों की ऑक्सीजन खत्म हो चुकी है!
आऽऽऽऽ ह!
अब अगर तू अपनी जिन्दगी को खत्म करना नहीं चाहता है तो मुझको अपनी साथी से पूछकर मेरी प्यारी चीज का पता बता दे!
वह चीज उसी स्थान पर खोई है जहां पर ऐसे प्राणी मौजूद थे! आधे इंसान और आधे... न जाने क्या!
म... मैं समझ गया कि तुम कहां की बात कर रहे हो! तुम्हारी प्यारी चीज यहां पर नहीं कहीं और खोई है!
और वह स्थान नागद्वीप के अलावा और कोई हो ही नहीं सकता।
तो बता कि वह जगह कौन सी है! कहां पर है? बता! वरना तबाह हो जायेगा!
यही तो समस्या है लावा! उस स्थान का पता मैं तुमको नहीं बता सकता!
क्योंकि बाहरी दुनिया वालों को नागद्वीप का पता बताने की सख्त मनाही है!

लावा, नागद्वीप की ही तलाश में था-
क्योंकि लावा, की खोई हुई सबसे प्यारी चीज नागद्वीप में ही थी-
उसकी बेटी-
और वह एकदम सुरक्षित थी-
ये होश में क्यों नहीं आ रही है?
इसको तो कहीं चोट भी नहीं लगी है।
इसको सदमा लगा है!
और सदमे का कारण हमको पता नहीं है!
कहीं इसके सदमे का कारण वह मानव तो नहीं है जो इसको बचाते-बचाते ज्वालामुखी के दहाने में गिर गया था और जिसका हमको चिन्ह तक नहीं मिला!
काश, हम इसके पिता को यहां पर जीवित ला सकते तो इस बच्ची की जान बच जाती।
तुम्हारा क्या कहना है राजकुमार विषांक!
कुमार विषांक आज तक कुछ बोले हैं जो आज बोलेंगे? मेरे कान तो इनकी आवाज सुनने के लिए सात वर्षों से तरस रहे हैं!
संभव है। इसके लिए अपनी जान दांव पर लगाने वाला वह मानव अवश्य इसका कोई नजदीकी संबंधी रहा होगा!
शायद वह इसका पिता रहा हो। और पिता की भयानक मौत ने इसको यह सदमा पहुंचाया हो!
विषांक को कुछ करने की आवश्यकता नहीं थी। वह समस्या को समझ गया था! और अब वह उसका निदान ढूंढ रहा था-

उसकी उंगलियों से ऊर्जा निकलकर
के दिमाग से मानसिक
तरंगों को 'रेडियो-बेव्स' की तरह
बाहर निकाल रही थी-
और वे मानसिक तरंगें चारों तरफ फैलकर उस इंसान को ढूंढ रही थीं, जिसको विषांक ने ज्वालामुखी के अंदर गिरते देखा था-
यह तय था कि अगर वह शख्स जिन्दा था तो वे मानसिक तरंगें उसको अवश्य ढूंढ निकालेंगी-
नागद्वीप अपनी मौत को खुद ही बुला रहा था-
लेकिन इस वक्त महानगर पर मंडराने वाला खतरा अकेला लावा ही नहीं था-
एक खतरा और आसमान से उतर रहा था-
बॉस! बॉस! हफ्! वेलकम बॉस! हफ्!
अरे! तू यहां पर अकेला क्या कर रहा है, ! अपने बाकी आदमी कहां हैं?
ज... जेल में!
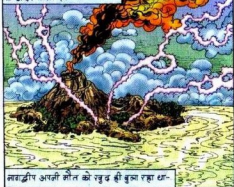
जेल में? व्हाट डू यू मीन 'जेल में'? कैसे? क्यों? कब?
वो बॉस, आप यहां पर थे नहीं तो आपने अपने एक्सपेरिमेंट के लिए जिस फायर ट्रक और जो फायरमैन की पोशाकों को रखा था उसकी मदद से हमने कुछ पैसे कमाने की सोची!
बेच डाला उन पोशाकों को और ट्रक को!
न... नहीं बॉस!
उस कबाड़ के तो सौ रुपए भी नहीं मिलते!
हम... हमने फायरमैन बनकर कॉरपोरेशन बैंक में डकैती डाली! एक भी गोली नहीं चलानी पड़ी! हम कामयाब भी हो गए थे!
पर नागराज ने बीच में आकर सब गड़बड़ कर दी!
उल्लू के पट्ठे! बगैर मेरी इजाजत लिए तूने डकैती डालने की हिम्मत कैसे की? सारा काम बिगाड़ दिया तूने?
हमारे आदमी भी पकड़े गए और तू नागराज की नजरों में भी आ गया! पर एक बात बता!
अगर नागराज ने तेरे बाकी साथी पकड़ लिए तो तू बचकर कैसे आ गया?
AIRLINES
एक चमत्कार ने बचा लिया बॉस! नागराज ने तो अपनी एक नागिन मेरे पीछे छोड़ दी थी, पर ऐन वक्त पर मेरे और उसके बीच में जमीन को फोड़कर लावे का झरना निकल आया!
नागिन उस लावे की फुहार को पार नहीं कर पाई!
लावा! महानगर में लावा?

और क्या देखा तूने? और क्या देखा? जल्दी बता!
और कुछ नहीं देखा! मैं... मैं तो भागने में ही बिजी था!
पर हां! हां! लावे के फुहार में से कोई आकृति भी निकली थी! दहकता लावा भी उसको जला नहीं पा रहा था!
और... और वो ये भी कह रहा था कि उसकी कोई प्यारी चीज खो गई है!
आकृति इंसान जैसी नहीं थी?
थी, बॉस! एकदम पतला-दुबला इंसान! अगर मरेगा तो उसे भागना ही पड़ेगा! चिता की आग तो उसे जला ही नहीं पाएगी!
बैंक चौक के पास! नागराज उससे लड़ रहा था! और मेरे ख्याल से वह लड़ाई जल्दी ही खत्म होने वाली नहीं थी! वे दोनों अभी भी वहीं पर होंगे!
ये तो गड़बड़ हो गई बॉस! कलावा का बचना हमारे लिए खतरे की घंटी है! अपनी बेटी को ढूंढ़कर वह सीधा हमारे पीछे आएगा! बदला लेने के लिए!
कलावा बच गया है! वह प्यारी चीज उसकी है! मैंने देखा था कि उसने भी अपनी बेटी को मुखी में गिरने से बचा लिया था!
इस वक्त कलावा कहां पर होगा जोगिया?
नागराज से तो भी इसको यह ही दी है! और मेरे में उससे वह शक्ति की ताकत भी है!
कलावा अगर नागराज से बच भी गया तो मेरे हाथों से बच नहीं पाएगा! अब कलावा पर से ध्यान हटाओ!
और उस प्लान पर ध्यान लगाओ, जिसको पूरा करने के लिए मैंने अग्निरोधी रसायन का आविष्कार किया है!

ओंस के काम में अड़ंगा डाल सकने वाले दो शख्स इस वक्त महानगर में मौजूद थे-
पर इस वक्त दोनों खुद ही एक दूसरे से जूझ रहे थे-
और ओंस का रास्ता साफ था-
अब मैं तुझे मारने से पीछे नहीं हटूंगा नागराज! यही नाम है न तेरा? मैं तुझको ऐसी भयानक मौत दूंगा कि तेरी साथी अपने आप भय से कांपकर मुझे उस स्थान का पता बता देगी जहां पर मेरी प्यारी चीज खोई हुई है!
ओह! इसके इशारे पर अब लावे का एक खोल बड़ी तेजी से मुझे ढकने के लिए आ रहा है! मेरे शरीर से चिपकते ही ये मुझे भस्म कर देगा!
मुझे इच्छाधारी कणों में बदलना होगा!
और इस बार बचने के लिए तेरे शरीर पर कोई भी सुरक्षा कवच नहीं है!
ओह! नागराज फिलहाल तो बच गया है! पर खोल के चारों तरफ से बंद होने के कारण इसके इच्छाधारी कण खोल से बाहर नहीं निकल सकते! और नागराज सिर्फ तीन पलों तक इच्छाधारी रूप में रह सकता है!
उसके बाद वह जैसे ही सामान्य रूप में आएगा, दहकते लावे के खोल का स्पर्श उसे भस्म कर देगा!
मुझे कुछ करना होगा! पर क्या? अरे हां, एक काम तो मैं कर सकती हूं!
मैं फायर ट्रक के फायर यंत्र की मदद से इस खोल को ठंडा करने का प्रयास कर सकती हूं!
नीचे गिरते उस खोल पर पानी की मोटी धार पड़ी-

और भाप के बादलों के बीच में गिरा वह दहकता खोल जमीन तक पहुंचते-पहुंचते ठोस हो चुका था-
नागराज की मौत तो टल गई थी-
लेकिन सौडांगी की मौत उसके करीब आ गई थी-
आहा, भाग! मैं भी तो देखूं कि तू अपनी दुम पर कितना तेज सरसरा पाती है!
जब तू भाग-भागकर थक जाएगी, उसके बाद मैं तुझसे उस जगह का पता पूछूंगा जो नागराज मरने से पहले मुझको नहीं बता पाया।
नागराज फिलहाल तो जिन्दा था! लेकिन मौत अभी भी उसके बगल में ही खड़ी थी-
ओह! मुझको बाहर मौजूद अपने जासूस सर्पों की दृष्टि से बाहर का सारा दृश्य दिख रहा है! सौडांगी इस हालत में मेरी मदद नहीं कर सकती! और मैं अंदर से ताकत लगाकर ग्रेफ्राइट बन चुके इस खोल को तोड़ नहीं सकता!
ओह! मुझको कुछ दिख रहा है, जिसका इस्तेमाल मैं आजाद होने के लिए कर सकता हूं! बस मुझको अपने जासूस सर्पों को सिग्नल भेजना पड़ेगा!
इस खोल के अंदर सांस लेने लायक हवा भी तेजी से खत्म हो रही है!
मैं लावे द्वारा भस्म होने से तो बच गया, लेकिन दम घुट-कर मरने से शायद न बच पाऊं! कैसे तोडूं मैं इस मजबूत खोल को? किसको बुलाऊं मदद के लिए!
अगले ही पल नागराज के निर्देशों पर उसके जासूस सर्प अमल कर रहे थे-
गुड! मुझे सीधा करो! इस दीवार से टिकाओ!
शाबाश!

शाबाश! अब उस फायर ट्रक को स्टार्ट करो!
सर्पों का पूरा झुंड फायर ट्रक पर चढ़ गया-
FIRE
इग्नीशन में चाबी घूमी-
स्टियरिंग को संभाला गया-
गियर लगा-
एक्सेलेटर दबा-
और ट्रक, खोल में कैद नागराज की तरफ लपक पड़ा-
FIRE
ग्रेफाइट का खोल मजबूत तो अवश्य था-
लेकिन ट्रक की टक्कर को झेल सकने की ताकत उसमें भी नहीं थी-
कड़क

सौडांगी को लावा के दहकते हाथ किसी भी पल कस सकते थे-
बता दे! मुझे उस स्थान का पता बता दे! वर्ना अगर मेरा सब्र खत्म हो गया तो मैं तुझे भी उस नागराज की तरह भस्म कर दूंगा!
अब आ! तू दूसरी दुनिया में आ! मैं अपनी प्यारी चीज को ढूंढने का कोई दूसरा रास्ता ढूंढ लूंगा।
मैं तुम्हारी गीदड़ भभकी से डरने वाली नहीं हूं! अगर मुझे मार दोगे तो अपनी प्यारी चीज का पता कैसे पाओगे?
अब मैं समझ गया हूं कि तू मुझको वह जानकारी नहीं देगी! इसीलिए मैं अब और समय बर्बाद नहीं करूंगा!
लावे का शिकंजा, सौडांगी को कसने के लिए बढ़ा-
लेकिन सौडांगी उसके शिकंजे से फिसल चुकी थी-
...सिर्फ नागराज ही छोड़ता है?
तू... तू बच कैसे गया नागराज?
मैं सिर्फ बचा ही नहीं लावा बल्कि तुझको काबू में करने का तरीका भी साथ लेकर आया हूं!
अरे! ये
ये सर्प

ये देख! ये सारे 'फायर टेंडर' मेरे बुलावे पर यहां पर आए हैं! वैसे भी तेरे लावे के कारण इनको तो यहां पर आना ही था! अब इनकी धारों की सम्मिलित फुहार तुमको भी एकदम ठंडा कर देगी और तुम्हारे लावे को भी!
इनकी थोड़ी सी मदद मैं भी करूंगा! तुम्हारे दिमाग को बेहोशी में डुबोकर ठंडा करके!
FIRE
FIRE
FIRE
लावा अपनी इस हार से इतना नहीं तड़प रहा था-
जितना कि इस ख्याल से कि अब वह अपनी जान से भी प्यारी चीज को शायद कभी ढूंढ़ नहीं पाएगा-

भगवान जाने कि अब तक जीवित थी भी या नहीं-
तुम क्या कर रहे हो विषांक ? लड़की तो बेहोशी में कसमसा रही है!
कुमार विषांक के अंदर कुछ अद्भुत शक्तियां हैं कुमारी विसर्पी! मैंने उनको महसूस किया है! ये अवश्य इसको होश में लाने का कुछ प्रयत्न कर रहे हैं!
अचानक विषांक की आंखें चमक उठीं-
उसको कुछ संकेत मिल रहे थे-
उसकी कोशिशें सफल हो गई थीं-
उसने उस बेहोश लड़की के उस पिता का पता लगा लिया था-
अरे! यह...यह क्या? कोई अदृश्य शक्ति मुझको बता रही है कि मेरी खोई चीज कहां पर है! यह जरूर मेरा वहम है! भला ऐसा कैसे हो सकता है!
जिसको धधकते ज्वालामुखी का पिघलता लावा भी खत्म नहीं कर पाया था-
इस पर फुहारे डालते रहो! ठंडा होने पर इसका नियंत्रण लावे पर से हट रहा है! ये बेहोश हो रहा है! अब ये जल्दी ही हमारे काबू में आ जाएगा!
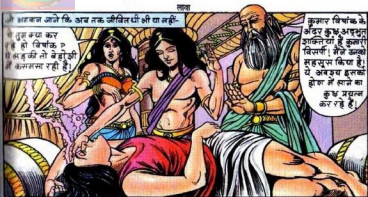
आSSS ह!
दिमाग अंधेरे में डूब रहा है! और ये पानी की मोटी धारें उस बेहोशी की रफ्तार को और तेज कर रही है!
साथ ही साथ मेरा दिमाग भी मुझसे खेल खेल रहा है!
मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि मुझे अपनी प्यारी चीज का पता मिल गया है!
नहीं! ये भ्रम नहीं है! अब मुझको उस चीज की स्थिति के संकेत भी मिल रहे हैं! वह चीज यहां से उत्तर-पश्चिम दिशा में है! यहां से लगभग सौ मील दूर!
मुझको वहां पर जाना है!
जाना है!
पर मेरी शक्ति मेरा लावे पर नियंत्रण है! और ये पानी की धारें लावे पर से मेरे नियंत्रण को कमजोर कर रही है! साथ ही साथ ये पानी लावे को जमीन से निकलते ही ठंडा भी कर दे रहा है!
बस! ये बेहोश होने ही वाला है!
लेकिन जहां चाह होती है-
वहां पर राह भी निक आती है-

लावा का हाथ जमीन के अंदर घुसकर लावे से संपर्क साध रहा था और पानी इतनी मात्रा में वहाँ तक पहुंच नहीं सकता था कि लावे को बुझा सके-
आssss ह! ये अवश्य लावे से संपर्क साध रहा है! मुझे इसका हाथ बाहर निकालना ही होगा! उम्मफ!
घबराओ मत नागराज! ये चाहे जितने लावे को बाहर निकाल ले, हमारे पास उसे बुझाने के लिए दर्जनों फायर-टेंडर हैं!
लेकिन फायर-टेंडर भी तब भला क्या कर सकते थे-
जब आग खुद उनके नीचे दहक उठे-
हे भगवान! लावे के तो कई झरने फायर ट्रकों के नीचे ही फट पड़े हैं! और फायर ट्रक जलने लगे हैं! अब लावा को मैं किस चीज से रोकूंगा?

आऽऽऽ ह! मेरा सिर अभी तक घूम रहा है नागराज! इसीलिए मुझे तेरी जान बख्शनी पड़ रही है! वैसे भी अब मुझको उस स्थान का पता मिल गया है जो तू मुझे बताना नहीं चाहता था! अब मैं पहले उस प्यारी चीज को हासिल करूंगा, और फिर उन दुष्टों को दंड दूंगा जिन्होंने मेरी प्यारी चीज को मुझसे जुदा किया! और फिर मुझको इस हालत में पहुंचा दिया!
बस, इस वक्त मुझको उनकी शक्लें याद नहीं आ रही हैं!
ये तो सचमुच नागद्वीप की दिशा में जा रहा है। पर...पर इसको नागद्वीप का पता मिला कैसे?
पता नहीं सौडांगी! लेकिन अगर इसकी वह प्यारी चीज सचमुच नागद्वीप में ही है तो यह उसको पाने के चक्कर में नागद्वीप को तबाह कर सकता है!
मुझे इसको रोकने के लिए इसके पीछे जाना होगा!

लावा को रास्ते में ही
लेने के लिए हवा में उड़ा-
लेकिन
क्या हुआ नागराज! तुम लावा का पीछा करना छोड़कर उल्टी दिशा में क्यों उड़े जा रहे हो?
इंटरनेशनल गोल्ड एक्सचेंज की इमारत के बाहर तैनात मेरा जासूस सर्प खतरे के संकेत भेज रहा है!
जाने क्यों मुझे लग रहा है कि लावा के आने और एक्सचेंज पर हमला होने में कोई न कोई संबंध जरूर है!
वैसे भी नागद्वीप के वासी लावा से अपनी रक्षा कर सकने में सक्षम हैं। लेकिन महानगर वासी लावा जैसे खतरे से कभी निपट नहीं पाएंगे!
महानगर के लिए लावा जैसे एक खतरे से निपटना मुश्किल था-

पर इंटरनेशनल गोल्ड एक्सचेंज के सामने उसके जैसे तीन खतरे मौजूद थे-
गोल्ड-एक्सचेंज के गेट पर तैनात गार्डों को तो हमने चित्त कर दिया बॉस! पर गैलरी में मौजूद गॉर्ड हम पर गोलियां बरसा रहे हैं!
जिस तरह से ये गॉर्ड आग की दीवार को हमारी तरह पार नहीं कर सकते वैसे ही इनकी गोलियां हमारी डबल बुलेटप्रूफ जैकटों को पार नहीं कर सकतीं।
तू तो बस फायर बमों को दागता जा! और आग की दीवारें खड़ी करता जा!

हमने गलत समय पर इस स्थान पर काम शुरू कर दिया है! हमारे लिए दोनों बड़े खतरे कलावा और नागराज अभी भी महानगर में ही मौजूद हैं!
हमारी सूचना के मुताबिक अभी दोनों आपस में ही उलझे हुए हैं! बिना रुके के मरे वह लड़ाई खत्म तो होगी नहीं! और बाकी बचे को हम संभाल लेंगे! फिलहाल इस विषय पर सोचने की जरूरत नहीं है!
वहां तक तुम कभी पहुंच नहीं पाओगे!
अभी तो उस लॉकर तक पहुंचने की सोचो जहां पर कई टन सोना रखा हुआ है!
य... यहां पर तो अल्ट्रा मॉडर्न सिक्योरिटी सिस्टम लगा है, बॉस!
जमीन के अंदर से आवाज आ रही है!
तुम जैसे शैतानों के लिए ये सिक्योरिटी सिस्टम पूरी दुनिया में लगा हुआ है! और इस सिक्योरिटी सिस्टम का नाम है...
नागराज!
सही समझे!
हम तो समझे नागराज!
पर तुम नहीं समझे! यहां पर अपनी सुरक्षा के लिए हमने जगह-जगह पर फायर बम फिट कर रखे हैं!

जो मेरे रिमोट के एक इशारे पर फट सकते हैं! और तुम्हारी नागशक्तियां भी तुमको आग से नहीं बचा सकतीं!

इन तीन आग उगलते शैतानों से नागराज की शक्तियां नहीं निपट सकती थ

आग को आग ही काट सकती थी-

लावा ही इन शैतानों के षड्यंत्र को नष्ट कर सकता था-

पर फिलहाल तो उसका कहर नागद्वीप पर बरसने वाला था-

लेकिन नागद्वीप पर मौजूद नाग, लावा को देख सकते थे-

ये कौन शैतान है जो हमारे आस-पास मंडरा रहा है!

ये कहीं वही तो नहीं है जिसको मैंने संकेत भेजे थे! पर इसकी शक्ल वैसी नहीं है!

जैसी मैंने बेहोश लड़की के दिमाग द्वारा देखी थी!

यह वो इंसान नहीं हो सकता जो लड़की को होश में ला सके!

यह तो शायद उसकी जान लेने अ है! अब मैं इससे संपर्क नहीं करूं यह खुद ही निरा होकर वापस चल जाएगा!

क्रमश

क्या नागद्वीप का अदृश्य कवच ल को अपनी बेटी तक पहुंचने से रे पाएगा? और क्या नागराज रे पाएगा अब तक की सबसे डकैती को? क्या वह ऐसा कर स के लिए जिंदा भी रह पाएगा? होगा इस तबाही का अंत? जा के लिए इंतजार करें...

विनाशलील

जो मेरे रिमोट के एक इशारे पर फट सकते हैं! और तुम्हारी नागशक्तियां भी तुमको आग से नहीं बचा सकतीं!

इन तीन आग उगलते शैतानों से नागराज की शक्तियां नहीं निपट सकती थ

आग को आग ही काट सकती थी-

लावा ही इन शैतानों के षड्यंत्र को नष्ट कर सकता था-

लेकिन नागद्वीप पर मौजूद नाग, लावा को देख सकते थे-

ये कौन शैतान है जो हमारे आस-पास मंडरा रहा है!

ये कहीं वही तो नहीं है जिसको मैंने संकेत भेजे थे! पर इसकी शक्ल वैसी नहीं है!

जैसी मैंने बेहोश लड़की के दिमाग द्वारा देखी थी!

यह वो इंसान नहीं हो सकता जो लड़की को होश में ला सके!

यह तो शायद उसकी जान लेने आ है! अब मैं इससे संपर्क नहीं करूं यह खुद ही निराश होकर वापस चल जाएगा!

क्रमश

क्या नागद्वीप का अदृश्य कवच ल को अपनी बेटी तक पहुंचने से रे पाएगा? और क्या नागराज रे पाएगा अब तक की सबसे डकैती को? क्या वह ऐसा कर स के लिए जिंदा भी रह पाएगा? होगा इस तबाही का अंत? जान के लिए इंतजार करें...

विनाशलील